शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रसाद की कामायनी में आनंदवाद

डॉ. शशिकांत चंदेला
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय महाविद्यालय, मेहंदवानी
डिण्डौरी, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आनंद मानव जीवन की एक अनुभूति है और परिणाम भी। जिसे मनुष्य अनेक प्रकार से अनुभव करता है यथा- कार्यसिद्ध, कलाकृति, संगीत व साहित्य के माध्यम से। मनुष्य प्रयास के द्वारा अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त करता है, वही आनंद है। दरअसल आनंद मानव जीवन की सुखात्मक दशा का वह आंतरिक भाव है जो मानव चित्त को प्रसन्न व आह्लादित कर परमात्म से एकाकार होने के लिए प्रवृत्त करता है। आनंद मानव जीवन के आत्म से परमात्म के बीच साक्षात्कार कराकर आनंद के उपागम मुहैया कराता है। प्रस्तुत शोध पत्र में जयशंकर प्रसाद के 'कामायनी' महाकाव्य में आनंदवाद का विश्लेषण किया गया है।

भूमिका

'आनंदवाद' दो शब्दों से मिलकर बना है-आनंद और वाद। जब इनके शाब्दिक अर्थ की ओर प्रवृत्त होते हैं तब आनंद-उल्लास, खुशी, हर्ष और मन की सुखात्मक स्थिति के पर्याय के रूप में समक्ष आता है। वाद का अर्थ-परंपरा, सिद्धांत और विचारधारा से लिया जाता है। अत: आनंदवाद एक ऐसी विचारधारा या सिद्धांत का नाम है जिसमें आनंद को मानव जीवन का मूल लक्ष्य माना जाता है। इस विचारधारा को दो प्रकार से समझा जा सकता है। पहला-आनंद ही मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है और दूसरा जीवन में कठोर नियमों का पालन करने पर ही परम आनंद की प्राप्ति होती है। इस प्रकार मानव का जीवन ही आनंद है और आनंदवाद जीवन का सार। वर्तमान समय में मानव जीवन में भौतिक सुख रूपी मायाजाल में उलझ गया है तब इस उलझन से मुक्ति का साधन है 'कामायनी।'

प्रसाद के रचनासंसार का अध्ययन करते हुए जाना कि कामायनी जीवन का विशिष्ट महाकाव्य है। जिसका उद्देश्य जीवन के विकास और आनंदवाद की स्थापना है। इतना ही नहीं मानव जीवन की ज्वलंत समस्याओं का सटीक समाधान भी है। मानव की चरम परणिति आनंद है इसलिए आनंदवादी आचार्य अभिनवगुप्त ने- "अभेदमय आनंद रस को मूल रस मानते हैं।"[1]

कामायनी में आनदंवाद

अपने समय की युगचेतना और युगसत्य का बोध कराने वाले जनवाद के प्रणेता युग प्रर्वतक कवि जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' की वाणी वर्तमान संघर्षरत जनता के लिए मुक्तिगीत बन गयी है, यही मुक्तिगीत प्रतिकूल धाराओं से टक्कर लेती हुई जनता के संघर्षों और संकल्प को आगे बढ़ाती है। जहां केवल आनंद ही आनंद है। ऐसा माना जाता है कि मानव जीवन के अन्तःकरण की एक आत्मानुभूति का नाम ही आनंद है-"बस उसके लिए एक ही रास्ता है, वह है

आत्मविशवास और आस्था।"[2] हमें बोध होता है कि आनंद मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को रस से आप्लावित कर हृदय को आलोड़ित करता है। इससे जन संस्कृति की रक्षा होती है और जनता के बीच नयी संवेदना, नयी प्रतिक्रिया, नये भाव और नये विचार, नया जीवन मिलता है। प्रसाद जी कामायनी के माध्यम से मनुष्य की पीड़ा, करुणा और सौन्दर्य का बोध कराते हुए आदर्श मानव चरित्र की स्थापना करते हैं। इस आदर्श चरित्र की अभिव्यक्ति इन पक्तियों में निहित है-

"जग जीवन उल्लास मुझे नव आशा नव अभिलाष मुझे
सुन्दर विश्वासों से ही बनता रे सुखमय जीवन।"[3]

प्रसाद की गहन अनुभूति और उन्नत अभिव्यक्ति मानव जीवन की साकार प्रतिमा है। साहित्य जगत के इस विशाल सागर में प्रसाद की कामायनी मानव और मानव के बीच समता का भाव जगाती है। इसी कारण कामायनी छायावाद से लेकर आज तक की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी गयी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस महाकाव्य को मानव जीवन के प्रति संपूर्ण चिंतन-मनन का प्रतिफलन कहना अधिक समीचीन होगा, क्योंकि प्रसाद जी ने अपनी अमर कृति में मानव समाज की सामयिक स्थिति को पौराणिक कथा के रूप में परिवर्तन कर उसे न्यायोचित रूप दिया है। यही न्याय प्रिय की संवेदना मानव की अंतरात्मा का सकारात्मक पहलू बनता है। कामायनी के मानव में मनु का मन और श्रद्धा का हृदय तथा इड़ा की बुद्धि के सहारे अपने आंतरिक मानव अधिकारों से संघर्ष करते हुए विशवास की सहायता से मानव जीवन को आनंदलोक तक पहुंचाता है। इसी कारण मानव और मानव के बीच समरसता और समन्वय का भाव प्रतिपादित होता है। वे कहते हैं-

"समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक बिलसती, आनंद अखण्ड घना था।"[4]

समरसता का यह सिद्धांत ज्ञान, क्रिया और इच्छा में समन्वय स्थापित करके जीवन में आनंद प्रदान करता है। आनंद की इस अवस्था में परमार्थ सत्ता से एकाकार कर पाता है। डॉ. रमेशचंद्र मिश्र ठीक ही कहते है- "जिस प्रकार सरिता का जल सागर के जल में मिलकर तन्मय हो जाता है उसी प्रकार व्यक्ति की आत्मा परमात्माभाव में लीन होकर शिव रूप में समरसता की स्थिति को प्राप्त होता है। आनंद पद में लीन योगी की स्थिति ही समरसता होती है।"[5] प्रसाद जी अपनी रचना कामायनी में एक नवीन जीवन दर्शन की स्थापना करने में सफल हुए हैं और वह है आनंदवाद, जो आज भी अक्षय कीर्ति स्तंभ है तथा मानव जीवन के लिए नव अनुभूति का वाहक है। कामायनी के रहस्य सर्ग में कवि ने इस स्थिति को स्पष्ट रूप से समझाया है-

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके,
यह विडम्बना जीवन की।"[6]

इसी प्रकार आनंदवाद के अध्येयता डॉ. श्रीराम शर्मा लिखते हैं- "बुद्धिवाद के कारण आज का मानव अत्यधिक संत्रस्त है। बुद्धिवाद ही मानव के मन और हृदय में व्यवधान उपस्थित करता है। जैसे ही व्यवधान समाप्त हो जाता है तो मानव हृदय आह्लाद में डुबकियां लगाने लगता है।"[7] निश्चित ही आज का मानव बुद्धिवाद के कारण संत्रस्त है। यही बुद्धिवाद मानव मन और हृदय में व्याघात उत्पन्न करता है। जैसे ही यह व्याघात समाप्त होता है व्यक्ति आनंदलोक की

ओर अग्रसर होता है तथा मन और हृदय आनंद से विभोर हो जाता है।

प्रकृति की सबसे बड़ी औषधि प्रसन्नता है। जिससे मानव मन के सभी विकार दूर हो जाते है और जीवन में उत्साह का नवीन संचार होता है। प्रसाद जी की कामायनी आज के मानव जीवन की बौद्धिक और भावनात्मक विकास की जीती-जागती कहानी है। यह अनेक अन्तर्विरोधों और असंगतियों के बाद भी जीवन में समरसता का संचार करती है। जैसे शिववदान सिंह चौहान ने माना कि- "उनकी (प्रसाद) वाणी में मनुष्य की महिमा का उद्घोष है, रूढ़िगस्त समाज के बन्धनों और मनुष्य के शोषण उत्पीड़न के विरूद्ध एक नैतिक और न्यायपरक भावना का मार्मिक प्रतिवाद है और समाज के अधिकारवंचित प्राणियों के प्रति सहज करुणा और सहानुभूति की उदात्त भावना है।"[8]

वर्तमान समय में प्रसाद की कामायनी मानव जीवन के उद्देश्य को मन, वचन और कर्म से जोड़ती हुई हमें आशातीत सफलता की ओर ले जाती है। यह सफलता निश्चय ही आनंद और समृद्धि का द्योतक है। मानव समाज को अपना विकास करने के लिए आशावादी विचारों को अपनाना जरूरी है। श्रद्धा भाव से चलने वाला मानव संसार में अपनी एक विशेष छाप छोड़ देता है। मानव के लिए श्रद्धा ही वह शक्ति है जो अनेक मुसीबतों व आपदाओं से बाहर निकालकर लक्ष्य की ओर पंहुचाने का काम करती है या पहुंचा देती है। जहां मानव के प्रयत्न, संकल्प और दृढ़ता द्वारा समस्त अभिलाषा पूरी हो सकती है। इससे मानव अपने जीवन को आनंदमय बनाकर जी सकता है। छायावाद की उपनिषद कही जाने वाली कामायनी मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव जीवन की सम्पूर्ण कहानी को प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में कामायनी मनु और श्रद्धा के माध्यम से भौतिकता और बौद्धिकता के भार से जकड़े हुए मानव समाज को आनंद रूपी सागर तक ले जाती है जहां केवल और केवल सुख और शान्ति ही है। प्रासंगिक पक्तियां द्रष्टव्य हैं-

"औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत करलो, जग को सुखी बनाओ।"[9]

प्रसाद की कामायनी मानव जीवन की सार्थकता को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करती है, जहां मानव का जीवन अत्यंत गहरा और मधुर भावों से भरा हुआ है। इसी से मानव में आनंदवाद की स्थापना होती है। कामायनी की उपादेयता अत्यंत प्रासंगिक व बहुआयामी है जो मान्व जीवन को आनंद व मनोरंजन के साथ-साथ समाज को जीने की स्वस्थ्य दृष्टि देता है और इसी से मानव समाज में एक भावात्मक संबंध स्थापित होता है। कामायनी मानवीय जीवन का यथार्थ दस्तावेज है जो सदैव व्यक्ति को मानवीय रूप में देखती है। कामायनी का मानव चिंता से आनंद तक कैसे पहुंचता है। अधोलिखित पक्तियों में देखा जा सकता है-

"जीवन-धारा सुन्दर प्रवाह,
सत, सतत, प्रकाश सुखद अथाह।"[10]

काव्य रूप की दृष्टि से कामायनी अत्यंत चिंतन प्रधान है, जिसमें कवि ने मानव समाज को महान संदेश देते हैं- वह है मानव जीवन में प्रेम की महानता का प्रतिपादन। क्योंकि कामायनी जगतकल्याण की भूमि स्वरूपा है। यही श्रद्धा की मूल स्थापना है। मानवता की आधारशिला रखने वाला यह महाकाव्य श्रद्धा और मनु के माध्यम से सृष्टि के विकास के साथ-साथ मनुष्य के चरम विकास का उपादान बन सकी है-

"मैं लोक-अग्नि में तप नितांत,
आहुति प्रसन्न देती प्रशांत,
तू क्षमा न कर कुछ चाह रही, जलती छाती की दाह रही,
तो ले ले जो निधि पास रही, मुझको बस अपनी राह रही।"[11]

प्रसाद ने कामायनी में मानव जीवन के उन मधुर स्मृतियों को चित्रित करने का प्रयास किया है, जिससे मानव समाज अपने जीवन पथ में आगे बढ़ने का अथक प्रयास करता है। जहां पर प्रेम भरी भावनाओं की सच्चाई को परखा जा सकता है। इस प्रकार प्रेममयी मधुवन में अपने जीवन के रसीले अनुभवों को व्यक्त किया जा सकता है और उसकी व्याकुलता को समझा जा सकता है। कहने का भाव यह है कि आशा से आनंद को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि जीवन की प्रत्येक सुबह मानव जीवन को कुछ न कुछ अवश्य देकर जाती है। देखिए-

"उषा सुनहले तीर बरसाती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई
उधर पराजित कालरात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।"[12]

इसी तरह मानव का चिंतन, कर्म और जीवन की स्पष्ट रूपाकृति ही आनंद का प्रस्थान बिंदु बनती है-

"नव कोमल आलोक बिखरता हिम-संसृति पर भर अनुराग,
सित सरोज पर क्रीड़ा करता जैसे मधुमय पिंग पराग।"[13]

आनंद मानव जीवन की अमूल्य निधि है। संसार में इस सुख से बढ़कर कोई सुख नहीं है। व्यक्ति का विकास उसके विवेक पर टिका होता है। जो मानव जीवन को यश, प्रतिष्ठा और सफलता की ओर उन्मुख करता है। इसी से व्यक्ति अपने भाग्य और पुरूषार्थ को गढ़ पाता है तथा यश और आनंद प्राप्त करता है। जेम्स ऐलन लिखते भी हैं-'आत्मसंयमी आदमी ही अनन्त सुख को जानते हैं।"[14]

कामायनी जीवन संघर्ष को गहराई से अनुभूत कर यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है और मानव समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए समाजिक शक्ति का संतुलन बनाये रखती है। यह दृश्य उनकी काव्याभिव्यक्ति में देखा जा सकता है-

"चलते थे सुरभित अंचल से जीवन के मधुमय निश्वास,
कोलाहल में मुखरित होता देव जाति का सुख-विशवास।"[15]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः मनुष्य को चिंता से आनंदलोक तक पहुंचाने का महतश्रेय साहित्य की अमर कृति कामायनी को जाता है, क्योंकि मनुष्य का जीवन अनेकानेक विडम्बनाओं यथा- ज्ञान, क्रिया, इच्छा आदि से घिरा होता है जिनमें समन्वय स्थापित कर समरसता प्रदान कर सके। यह समन्वयवादी दृष्टि और समरसतावादी चेतना ही आनंदवाद की प्रमुख विशेषता है। यह कहें कि आनंद ही जीवन का सार है और कामायनी में निहित समरसता आनंदवाद।

संदर्भ ग्रंथ

1 ऑनलाइन गूगल के माध्यम से

2 डॉ. अवधेश प्रधान, साहित्य और समय, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर इलाहाबाद-211006, पृष्ठ 126

3 डॉ. शिवकुमार, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां अशोक प्रकाशन, 2615, नई सड़क, दिल्ली-6, पृष्ठ 499

4 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता, कमल प्रकाशन नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 134

5 डॉ. जगदीपशरण, उपकार यूजीसी हिंदी उपकार प्रकाशन 2/11 ए स्वदेशी वीका नगर शाह सिनेमा के सामने, आगरा-282002, पृष्ठ 187

6 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाशन नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 125

7 डॉ. जगदीपशरण, उपकार यूजीसी हिंदी उपकार प्रकाशन 2/11 ए स्वदेशी वीका नगर शाह सिनेमा के सामने, आगरा-282002, पृष्ठ 187

8 डॉ. शिवकुमार, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां अशोक प्रकाशन 2615, नई सड़क दिल्ली-6, पृष्ठ 499

9 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 56

10 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाशन नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 112

11 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाशन नई दिल्ली-110002 पृष्ठ 112

12 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाशन नई दिल्ली-110002 पृष्ठ 16

13 जयशंकर प्रसादः कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाषन नई दिल्ली-110002, पृ0-16

14 ऑनलाइन गूगल के माध्यम से

15 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अमरनाथ गुप्ता कमल प्रकाशन नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 11